श्रीमद्बुद्धिसागरसूरिग्रंथमाळा-ग्रंथांक नं ६८

शास्त्रविशारदजैनाचार्ययोगनिष्ठ श्रीमद् बुद्धिसागरमहाराज

सूरीश्वरविरचित.

# स्नात्रपूजा.

छपावी प्रसिद्ध करनार

श्री अध्यात्मज्ञानप्रसारकमंडळ.

हा. वकील मोहनलाल हिमचंद.

पादरा.

अमदावाद- शाहपुर नवीपोळमां आवेला श्री प्रजाहितार्थ

मुद्रालयमां पटेल दाह्याभाई दलपतरामे छाप्युं

प्रथमा आवृत्ति    प्रत १०००

वीर सं २४५०    सने १९२४

विक्रम सं १९८०

किंमत रु ०-१-०

तैयार छे.                                                    जल्दी मंगावो !

श्रीमज्जैनाचार्यबुद्धिसागरसूरीश्वरजीनी कसायेली

कलमथी लखायेलां

## तद्दन नवीन पुस्तको.

# पूजासंग्रह.

जेनी अंदर जुदी जुदी जातनी बावीश पूजाओ के जे अध्यात्म ज्ञानथी भरपूर छे एटलुंज नहि पण अत्यार अगाउ नहि रचायेली पंचधा योगपूजा, अष्टांग योगपूजा, दानशीयल तप भावपूजा, षडावश्यक पूजा, महावीरजन्म जयंती पूजा, गुरुपूजा तथा जैनशासन श्री घंटाकर्ण महावीरपूजा वगेरे पूजाओ अनेक नवीनविषयोथी ओतप्रोत अने तद्दननवीढबथी चालु जमानाने अनुसरतां रीते सुंदर रागरागिणीओथी बनावेली छे, जेनो प्रचार अनेक मनुष्योना मन हरी लेशे. सुंदर पाकुं बाइन्डीग पृष्ठ ४१५ किंमत मात्र रु. १-०-० पोस्टेज अलग.

श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिग्रथमाळा-ग्रंथांक नं. ६७

शास्त्रविशारद जैनाचार्य योगनिष्ठ श्रीमद्बुद्धिसागरमहाराज

सूरीश्वर विरचित.

# स्नात्रपूजा.


छपावी प्रसिद्ध करनार,

श्री अध्यात्मज्ञानप्रसारकमंडल.

हा. वकील मोहनलाल हिमचंद.

पादरा.

प्रथमा आवृत्ति प्रत १०००

वीर स. २४५० सने १९२४

विक्रम स १९८०

किंमत रु ०-२-०

अमदावाद—शाहपुर नवी पोळमा आवेला श्री प्रजाहितार्थ
मुद्रालयमा पटेल डाह्याभाइ दलपतरामे छाप्यु.

## प्रस्तावना.

सर्वातिशये शोभता, प्रभु महावीर जिनेश,
शासननायकजगपति, प्रणमुं हुं विश्वेश.
प्रभुस्नात्रनी भावना, करतां शांति थाय,
रोग शोक दूरे टळे, स्नात्रपूजामहिमाय.

( आचार्य श्री बुद्धिसागरजी )

सर्वातिशये विभूषित शासन नायक चरम जिनेश्वर शासनोद्धारक श्रीमद् महावीर प्रभुनु स्नात्र के जेना रचनार **बालब्रह्मचारी कविराज अध्यात्मज्ञानप्रचारक भारतभूषण शास्त्रविशारदजैनाचार्य योगनिष्ठ श्रीमद् बुद्धिसागरजी सूरीश्वरजी छे.** तेनो अत्यंत हर्षपूर्वक प्रकाश करवामा आवे छे. अगाउ पण केटलाक पंडितो अने मुनिवरोना स्नात्र सुप्रसिद्ध छे, परंतु जमानाने अनुसरीने आसन्नोपकारी शासनप्रभावक श्रीमद् महावीरप्रभुनुं स्नात्र अत्यारसुधी कोइए बनावेलुं नहोतु, ते गुरुश्रीए केटलाक भक्तोना आग्रहथी रचीने समाजपर उपकार कर्यो छे, ज्यारे ज्यारे महान तीर्थंकरोनो विश्वमा जन्म थाय छे त्यारे त्यारे इंद्रो भक्तिभावपूर्वक जन्मोत्सव करे छे. तेवी भावनाने धारीने अत्यारे पण जैनमंदिरोनी अंदर सिंहासनमा प्रभु अने सिद्धचक्रने पधारावीने अष्टप्रकारे स्नात्र भणावी पूजा ( सेवा ) भक्ति करवामा आवे छे. जैनधर्म स्याद्वाद शैलीथी भरपूर छे, अने तेमा एकांतवाद याने दुराग्रह कदाग्रह धारण न करवो ए वात स्पष्ट छे, छता पण समाजमां हजु पण तेवा मनुष्यो छे के एकांत कदाग्रह करी साध्यने भूली जइ केवळ साधनोना एकांत मोहमा शक्तिनो व्यय करे छे अने एकांत कदाग्रहमा समाजनेज रहेवा

देवानो यत्न करे छे. साधनो द्वारातो साध्यने लक्षमां राखीने जे भक्ति (पूजा) सेवा करवामां आवे छे तेथी अत्यंत लाभ थाय छे अने ते मार्गेज निष्कामभावे प्रवृत्ति करवी तेज योग्य छे. जेवी भक्तनी विचारणा अने भावना ते प्रमाणे भक्ति-पूजानुं फळ मळे छे. महावीर प्रभुनु नाम विश्वमां ज्या त्या प्रसिद्धि पामी मनुष्यो तेमना विचारोने ग्रहण करतां थाय एम गुरुश्रीनी आंतरिक भावना छे. आ स्नात्र खरेखर विचारणीय अने मननीय छे एटलुंज नहि पण ते मुख पाठे करवा योग्य छे. गुजरातना घणा भागोमां प्लेगादि रोगो शरु थया हता त्यारथी रोग शोक निवारणार्थे तथा शांति माटे हजु पण घणा गामोमां दररोज स्नात्र भणवामा आवे छे. महावीर प्रभुनुं स्नात्र भणवानो विशेष प्रचार थाय अने तद्द्वारा आ स्नात्रनो सार ग्रही विश्वना मनुष्यो भक्ति करी तद्द्वारा महावीर प्रभुनुं स्मरण निदिध्यासन करी भक्ति सेवा भावनावडे कर्मबंधनो तोडवा यथाशक्ति प्रवृत्ति करे ते हेतुथी आ स्नात्र पूजा नामनो लघुग्रंथ श्री अध्यात्म ज्ञान प्रसारक मंडळ तरफथी श्रीमद् बुद्धिसागर ग्रंथमाळामा ग्रंथांक नं ६८ मा तरीके गुंथी बहार पाडवामा आवे छे. अंतमा वाचको प्रत्ये थयेल भूलनी क्षमा इच्छी हंस चंचुवत् सार ग्रहण करी स्वोन्नतिमाटे प्रवृत्ति करशे एम इच्छी विरमुं छुं. ॐ श्रीगुरु शांतिः ३

| | |
|---|---|
| साणंद सं १९८० माह सुद पंचमी वसंतपंचमी | लेखक. सद्गुरु चरणोपासक. आत्माराम खेमचंद कापडीआ. |

# श्री अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ तरफथी

## श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजीग्रन्थमाळामां

## प्रगट थयेला ग्रन्थो.

| ग्रथांक | | पृष्ठ | किंमत. |
|---|---|---|---|
| १ | क. भजन संग्रह भाग १ लो. | २०० | ०–८–० |
| * १ | अध्यात्म व्याख्यानमाळा. | २०६ | ०–४–० |
| * २ | भजनसंग्रह भाग २ जो. | ३३६ | ०–८–० |
| * ३ | भजनसंग्रह भाग ३ जो. | २१५ | ०–८–० |
| * ४ | समाधिशतकम्. | ६१२ | ०–८–० |
| * ५ | अनुभवपच्चिशी. | २४८ | ०–८–० |
| ६ | आत्मप्रदीप. | ३१५ | ०–८–० |
| * ७ | भजनसंग्रह भाग ४ थो. | ३०४ | ०–८–० |
| ८ | परमात्मदर्शन. | नरक | ० १२-० |
| * ९ | परमात्मज्योति. | ५०० | ० १२-० |
| * १० | तत्त्वबिंदु. | २३० | ०–४–० |
| * ११ | गुणानुराग. ( आवृत्ति बीजी ) | २४ | ०–१–० |
| * १२–१३. | भजनसंग्रह भाग ५ मो तथा ज्ञानदीपिका. | १९० | ०–६–० |
| * १४ | तीर्थयात्रानुं विमान ( आ. बीजी ) | ६४ | ०–२–० |
| * १५ | अध्यात्मभजनसंग्रह | १९० | ०–६–० |
| * १६ | गुरुबोध. | १७४ | ०–४–० |
| * १७ | तत्त्वज्ञानदीपिका | १२४ | ०–६–० |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | १८ गहूंलीसंग्रह भा. १ | ११२ | ०—३—० |
| * | १९—२० श्रावकधर्मस्वरूप भाग १—२ ( आवृत्ति त्रीजी ) | | ४०—४०—१—० |
| * | २१ भजनपदसंग्रह भाग ६ ठो. | २०८ | ०-१२-० |
| | २२ वचनामृत. | ८३० | ० १४ ० |
| | २३ योगदीपक. | ३०८ | ०-१४-० |
| | २४ जैन ऐतिहासिक रासमाळा. | ४०८ | १—०—० |
| * | २५ आनन्दघनपद ( १०८ ) संग्रह भावार्थ सहित. | ८०८ | २—०—० |
| * | २६ अध्यात्मशान्ति ( आवृति बीजी ) | १३२ | ०—३—० |
| * | २७ काव्यसंग्रह भाग ७ मो. | १५६ | ०—८—० |
| * | २८ जैनधर्मनी प्राचीन अने अर्वाचीन स्थिति. | ९६ | ०—२—० |
| * | २९ कुमारपाळ ( हिंदी ) | २८७ | ०—६—० |
| | ३० थी ४—३४ सुखसागर गुरुगीता | ३०० | ०—४—० |
| | ३५ षड्द्रव्यविचार. | २४० | ०—४—० |
| ० | ३६ विजापुरवृत्तात. | ९० | ०—४—० |
| | ३७ साबरमतीकाव्य. | १९६ | ०—६—० |
| | ३८ प्रतिज्ञापालन. | ११० | ०—५—० |
| | ३९—४०—४१ जैनगच्छमतप्रबंध, संघप्रगति, जैनगीता. | ३०४ | १—०—० |
| | ४२ जैनधातुप्रतिमा लेखसंग्रह भा. १ | | १—०—० |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४३ | मित्रमैत्री. | | ०–८–० |
| ४४ | शिष्योपनिषद्. | ४८ | ०–२–० |
| ४५ | जैनोपनिषद्. | ४८ | ०–२–० |
| ४६–४७ | धार्मिक गद्यसंग्रह तथा सदुपदेश भाग १ लो. | ९७६ | ३–०–० |
| ४८ | भजनसंग्रह भा ८ | ९७६ | ३–०–० |
| ४९ | श्रीमद् देवचद्र भा १ | १०२८ | १–०–० |
| ५० | कर्मयोग. | १०१२ | ३–०–० |
| ५१ | आत्मतत्त्वदर्शन | ११२ | ०-१० ० |
| ५२ | भारत सहकारशिक्षण काव्य | १६८ | ०-१०-० |
| ५३ | श्रीमद् देवचंद्र भा. २ | १२०० | ३–८–० |
| ५४ | गहुली सग्रह भा. २ | १३० | ०–४–० |
| ५५ | कर्मप्रकृतिटीकाभाषातर | ८०० | ३–२–० |
| ५६ | गुरुगीत गुहलीसग्रह. | १९० | ०-१२-० |
| ५७-५८ | आगमसार अने अध्यात्म गीता | ४७० | ०–६–० |
| ५९ | देववंदन स्तुति स्तवन संग्रह. | १७५ | ०–८–० |
| ६० | पूजासंग्रह भा. १ लो. | ४१६ | १–०–० |
| ६१ | भजन पदसंग्रह भा. ९ | ५८० | १–८–० |
| ६२ | भजन पदसंग्रह भा. १० | २०० | १–०–० |
| ६३ | पत्र सदुपदेश भा. २ | ५७५ | १–८–० |

नीचेना ग्रन्थो बे त्रण मासमा बहार पडशे.

६४ धातुप्रतिमालेख संग्रह भाग २

६५ जैनदृष्टिए ईशावास्योपनिषद् भावार्थविवेचन.

६६ पूजासंग्रह द्वितीयावृत्ति तथा अन्य पूजाओ सहित–
भाग २ बीजो

६७ स्नात्रपूजा. ०–२–०

## संस्कृत ग्रन्थो.

नं. ६८ शुद्धोपयोग
६९ दयाग्रन्थ
७० श्रेणिक सुबोध
७१ कृष्णगीता
७२ संघकर्तव्यग्रन्थ
७३ प्रजासमाजकर्तव्यग्रन्थ
७४ शोकविनाशक
७५ चेटकबोधग्रन्थ
७६ सुदर्शनासुबोध

* आ निशानीवाळा ग्रंथो सीलकमां नथी.

उपरनां पुस्तको मळवानुं ठेकाणुं.

वकील मोहनलाल हीमचंद.
( गुजरात ) पादरा.

शा. आत्माराम खेमचन्द.
साणंद.

भांखरीया–मोहनलाल नगीनदास.
मुंबाइ कोटबजार गेट नं. १९२–९४

बुकसेलर, मेघजी हीरजी.
पायधुनी–मुंबाइ.

शेठ. नगीनदास रायचंद भांखरीया.
मु. मेसाणा.

जैनाचार्य बुद्धिसागर सूरिकृत

# स्नात्रपूजा.

## स्नात्रविधि

प्रथम दुध, दहि. घी, केशर, फुल अने जळनुं पंचामृत करी बे कलश एक पाटली उपर चोखाना बे स्वस्तिक करी ते उपर मूकवा. कळशने महोडे नाडाछडी बांधवी. एक त्रण बाजोठनुं सिंहासन करी ते उपर प्रभुनी पधरामणीनुं सिंहासन मूकी तेमा एक रकेबीमां केशरना बे स्वास्तिक करी, त्रण नवकार गणी एक धातुनी पंचतीर्थी प्रतिमाजी तथा एक सिद्धचक्रजीनी प्रतिमाजी पधरावबा. प्रतिमाजीनुं मुख उत्तर वा पूर्व तरफ राखी पधरावबां. प्रतिमाजी नीचे एक पैसो मूकवो. सिंहासनना वचला बाजोठ उपर चोखानो एक स्वास्तिक करी एक फळ मूकवुं. प्रतिमाजी पधरावबाना सिंहासनना एक छेडे नाडाछडी बांधवी. एक रकेबीमां थोडां छूटां फुल तथा केशरवाला चोखा करी राखवा अने चामर, दर्पण, पंखो, घंट, विगेरे सामान

सिंहासन पासे राखवो. ज्यां वस्त्र चडाववानां आवे त्या नाडाछडीनो ककडो मूकवो, फूलनी अछत होय त्यां केशरवाळा चोखानो उपयोग करवो. स्नात्र भणाववावाळो माणस हाथमां फूल लइने उभो रहे अने विधिभणावनार माणस विधि शरु करे. कुसुमाञ्जलि बोली 'फूल चढाववुं'– विधि भणावनार माणस कुसुमांजलि चढाववानुं कहे त्यारे भगवान्ने कुसुमांजलि चढाववी. सात वखत कुसुमांजलि चढावी रह्या पछी स्नात्रीयो हाथ जोडीने ऊभो रहे अने विधि भणावनार विधि बोल्ये जाय, ज्यारे 'शुभ लग्ने जन्म्या प्रभु' ए दुहो पूरो थाय त्यारे स्नात्रियो त्रण खमासमण देइ चैत्यवंदननी विधि प्रमाणे चैत्यवंदनं करे ने जयवीयरायनो पाठ 'आभव मखंडा' सुधी कही हाथमां कळश लेइने उभो रहे ने विधि भणावनार ज्यारे 'सौधर्मेन्द्रे पंच रूप करी' ए पद पूरुं बोली रहे त्यारे जळनो प्रभुने अभिषेक करे. पछी ते ढाळ पूरी थया पछी भगवानने सिंहासनमांथी बहार लइ चोखा पाणीथी न्हवण करावी अंगलूहणां त्रण करी चन्दन पूजा करे. पछी आरति मंगल दीवो करवो.

आ विधि सामान्य प्रकारे लखी छे. परंतु ज्यां नाडाछडी लखी छे त्यां उत्तम वस्त्रोनो उपयोग करे वा उत्तम उत्तम द्रव्यनो उपयोग शक्ति प्रमाणे करे तो ते उत्तम छे.

---

"अथ जैनाचार्य बुद्धिसागर सूरिकृत"

# अथ स्नात्रपूजा प्रारंभः

---

दुहा

सर्वातिशये शोभता, प्रभु महावीर जिनेश, शासन नायक जगपति, प्रणमुं हुं विश्वेश. ॥ १ ॥ प्रभु स्नात्रनी भावना-, करतां शान्ति थाय; रोग शोक दूरे टले, स्नात्रपूजा महिमाय. ॥ २ ॥

कुसुमांजलि ढाळ.

## ऋषभदेव पूजा.

आठजाति कलशे न्हवरावे, इन्द्रो मनमां आनन्द पावे; प्रभु पूजा समकित प्रगटावे, प्रभु जाणी प्रभुने दिल लावे; कुसुमांजलिथी ऋषभ पूजीजे, अहो प्रभुगुण मन रीझीजे. ॥ १ ॥

(फूल चढाववुं.)

---

# शान्तिजिनपूजा.

दुहो.

क्षायिकनवलब्धि प्रभु, शान्तिनाथ जगदेव;
द्रव्यभावथी शान्तिने, पामो करीने सेव. ॥ १ ॥

ढाळ.

सहजानन्दस्वभावे शान्ति, केवलज्ञाननी शोभे कान्ति; टाळे सर्वजीवोनी भ्रान्ति, आपे तन्मय थातां क्षान्ति; चोसठ इन्द्रो सारे सेवा, पूजुं प्रणमुं शान्ति देवा. ॥ २ ॥

( फूल चढाववुं. ४ )

# नेमिनाथ पूजा.

दुहा.

केवलज्ञानमां भासतुं, अणुसम विश्व सदाय,
ते नेमि प्रभुपूजीए, भावब्रह्म प्रगटाय. ॥ १ ॥

ढाल.

बाल्यथकी जे ब्रह्मव्रतधारी, अनन्तशक्तिमय अवतारी, केवलज्ञानथी जगहितकारी; मोहशत्रु हणीए मोहारि, नेमिजिनेश्वरने पूजीजे, प्रभुस्वरूप थै प्रभु प्रणमीजे ॥ २ ॥

( फूल चढाववुं ३ )

# पार्श्वनाथ पूजा.

दुहा.

पार्श्वप्रभु प्रणमुं सदा, त्रेविसमा जिनराय;
वन्दे पूजे भावथी, सिद्धे वाछित काज. ॥ १ ॥

ढाल.

पार्श्वप्रभु जगमां जयकारी, परब्रह्म जगने सुखकारी; चोत्रिश अतिशयथी अवतारी, पांत्रिशवाणी गुणना धारी, पार्श्व पूजीजे ध्याने रहीजे, आत्मिक गुण प्रगटावी लीजे ॥ २ ॥ कुसुमांजलिए पूजा कीजे, प्रभुस्वरूप थावा दील कीजे. ॥ २ ॥

(फूल चढाववुं. ४)

# वीरप्रभु पूजा.

दुहा.

शासननायक जगधणी, परब्रह्म महावीर, सर्वदेवना देव जे, सर्वधीरमां धीर. ॥ १ ॥

ढाळ.

प्रभुमहावीरदेव समरीजे, आविर्भावे आतम

कीजे; वीर बनी महावीरने नजोए, कायरता दुर्गु-णने तजीए, प्रभुचरणे कुसुमाजलि धरीए, धीर वीरता वेगे वरीए; देहाध्यास तजी वीर थावुं. ते माटे वीर गावुं ध्यावुं. ॥ २ ॥

( फूल चढाववुं ५ )

## ॥ अथ सर्वजिनपूजा ॥

सकलजिनेश्वर प्रेमे पूजो, अशुभकर्मथी भवि-जन धूजो; कुसुमांजलि जिनचरणे धरीए, सहज स्वभावे शिवपुर वरीए ॥२॥ कुसुमांजलि पूजो सर्व जिनन्दा, तुज चरणकमल सेवे चोसठ इंदा.

( फूल चढाववुं. ६ )

इति चोवीश जिनपूजा.

## ॥ सर्व जिनपूजा ॥

ढाळ.

पन्नरक्षेत्रे अतीतकालमां, वर्तमानमां वर्त्तेजी, भाविकाले थाशे जे जिन; वीतरागगुण शर्तेजी, एकसो ने सित्तेरतीर्थंकर, उत्कृष्टा जे कालेजी. फूलुं

वांदुं गावुं ध्यावुं, आतम जे अजवाले जी ॥ १ ॥
जन्मोत्सव कल्याणक उजवे, इन्द्रादिक बहुभावे जी;
जन्मकाले तीर्थंकर सहुने, मेरुपर लेइ जावेजी;
सर्वजातिकलशा अभिषेके, प्रेमे प्रभु न्हवरावेजी.
एवा अरिहंत त्रण कालना, पूजीजे एकभावेजी ॥२॥

(फूल चढाववुं ३)

आतम भक्ति मल्या केइ देवा. ए राग.

त्रीजेभव तीर्थंकरकर्मने, बांध्यु वीरे भावे, द्रव्यभाववरथानकनयथी, प्रशस्यरागनादावे, सर्वजीवोने धर्मी बनावुं, सर्वविश्व उद्धारुं, रहे न जगमां कोइ दुःखी, सर्वजीवोने तारुं. ॥ १ ॥ शुभ उत्कृष्टा हर्षोल्लासे, जिनवरनामने बांधे, अनन्त पुण्य ग्रहीने प्रभुजी, सकलजीव हित साधे, मानव आयुः पूर्ण करीने, दशमास्वर्गमां जावे, पुष्पोत्तर वैमानिक सुरवर, स्वर्गतणा सुख पावे. ॥२॥ त्यांथी चवीने दक्षिणभरते, क्षात्रिकुंडपुरमाहे, त्रिशलाराणी कुखमां आव्या, ज्ञातकुले उत्साहे, त्रिशलामाता स्वप्नो देखी. आनंद अतिशय पावे, भारतने उद्धरवा प्रगट्या, प्रभुजी शक्ति प्रभावे ॥ ३ ॥ हाथी

वृषभने केशरी सिंह, लक्ष्मी पुष्पनी माला, चन्द्र रवि ध्वज कलश मनोहर, सरोवर पूर्ण विमान; सागर रत्ननी राशी अग्नि–, निर्धूम चौद निहाळे, चौदे स्वप्ननो अर्थ सुणीने, आनंदजीवन गाळे, ॥ ४ ॥ सिद्धारथराजाना हुकमे, जोषीओ त्यां आव्या, पुर बाहिर सुरम्य सभामां, अर्थविचारे फाव्या, ज्योतिषिओ भेगा थइने, बोले साची वाणी; तीर्थंकर वा चक्रवर्ती तुज, पुत्र थशे गुणखाणी. ॥५॥ राजा राणी अति हरखायां, ज्योतिषी संतोष्या; दानादिकथी धर्मिलोको, याचकने संतोष्या; भारतमां सहु घरघर लोको, जाणी आनन्द पाया, त्रिशलामाता गर्भने पोषे, धरे निरोगी काया. ॥ ६ ॥ चैत्रशुदि तेरशना दिवसे, मध्यरात्री थइ जातां; सर्व दिशाओ उज्वलशान्ति, आनन्दवाळी सुहाना, नवमहिनाने साडासात ज, दिवस पूरा थाता; त्रिशलामाताए प्रभु जनम्या, त्रिलोके थइ शाता. ॥ ७ ॥ भारतदेशे घरघर मंगल, घरघर हर्ष वधाइ, सिद्धारथराजा मन आनन्द, प्रगट्यो विश्व न माय. ॥ ८ ॥ शुभ लग्ने जनम्या प्रभु, त्रणभुवन उद्योत; नारकी पण आनन्दीया, जेनी अनंत ज्योत. ॥ ९ ॥

## हवे चैत्यवन्दन करवु तेनि विधि.

वीर आसने बेसी बे हाथ जोडी प्रभुजी सामी दृष्टि राखी 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवन्दन करुं' इच्छं एम कही 'सकळ कुशळवल्लि' कही जगचिन्तामणि कहेवुं. पछी जं किंचि, नमथ्थुणं-, जावन्ति चेइआइं, जावन्त केविसाहु, नमोऽर्हत् कही उवसग्गहरं कहेवुं, पछी आजवमखंडा सुधी अर्धा जयवीयराय कहेवा. अहिं सुधि कही पछी उभा थइ स्नात्रीआए कलश हाथमां लइ प्रभुजीना डाबा अंग तरफ उभा रहेवुं पछी विधि करनार विधि भणे.

---

राग उपरनो.

छप्पन दिक्कुमरी तीहां आवे, प्रभु जन्मोत्सव हेते; प्रभु माताने प्रणमे प्रेमे, सूतिकर्म संकेते. आठे दिक्कुमरी वायुथी; कचरो करतो दूरे, आठे कुमरी गंधोदकथी, सुगंधी जलने पूरे. ॥ १ ॥ आठ कुमारी कलशा धारे, दर्पण आठे धारे; आठकुमारी चामर वींझे, भाव भक्ति अनुसारे. आठ कुमारी पंखा क-

ग्ती, रक्षा करती चारे, चार दीपकने धारे प्रेमे, निज आतमने तारे. ॥ २ ॥ कदलीनां घर करी मनोहर, बाल प्रभुने लावे, पवित्र कर्मने करवा माटे, जल कलशे न्हवरावे, जलपुष्पे आभरणे पूजी, प्रभु शरीर शणगारे प्रभुना करमां राखडी बांधी, (वधावी नाडाछडी मूकवी;) जय जय शब्दोच्चारे. ॥ ३ ॥ माता पासे प्रभुने मूकी, निज निज स्थानक जावे, इंद्रासन ते वखते कंपे, महापुण्य सद्भावे, अवधि ज्ञाने इंद्रे जाण्यो, प्रभुजन्म सुखकारी; सुघोषा आदि घंटाओ, वगडावे जयकारी. ॥ ४ ॥ पालक नाम विमानमा बेसी, इन्द्र बहु परिवारे; अन्य विमानने वाहन वेसी, निज ऋद्धि अनुसारे, अन्य सुरोने देवीओ आवे, प्रभुने देखी वंदे, प्रभु अने प्रभु मात वधावी, इंद्र वदे गुण छंदे. ॥ ५ ॥ (फूल तथा केसरवाळाचो वाधी वधाववा.) जय जय माता जगमां जय जय, जय जय शब्दो बोले; त्हारो बालक जगतीर्थंकर, को नहि तेना तोले; प्रतिबिंब मातानी पासे, मूकी प्रभु कर लीधा; पंचरूप करे

निज कीधां, जावे कारज सिद्धयां. ॥ ६ ॥ मेरु उपर पांडुक वनमां, शिला सिंहासन ठावे; सौधर्मेन्द्रे खोळा मांहि, प्रभु धर्या शुभ भावे; चोसठ इन्द्रो, भाव धरीने, आव्या त्यां उल्लासे; निज निज शक्ति ऋद्धि भावे, इंद्रो पूर्ण विकासे. ॥ ७ ॥ अच्युतेद्रे औषधि तीर्थनी–, माटी जल मंगाव्या; आठजातिना कलश जरीने, इंद्रोए न्हवराव्या; फूल चंगेरी थाळ रकेबी, उपकारणो बहु जाति; प्रभुनी जक्ति करतां विध विध, निर्मल करता छाति. ॥ ८ ॥ भुवनपति ने व्यंतर ज्योतिष, वैमानिक बहुदेवा; अच्युतपतिनी आज्ञा पामी, करता बहुविध सेवा: एकक्रोड ने साठलाख सहु, कलशानो अभिषेक, अढीसे अभिषेक सहु मळी, सुर नहि चूके विवेक ॥ ९ ॥ (थोडो जळ अभिषेक करवो) इशान इन्द्रे करमां लीधा, प्रभुनी भक्ति कीधी; सौधर्मेन्द्रे पंचरूप करी, भक्ति करी प्रसिद्धि; (संपूर्ण जळनो अभिषेक करवो) पुष्पादिकथी प्रभु वधाव्या, आनंदना कल्लोले; मंगलदीवो आरति करीने, सुरवर जय जय बोले ॥ १० ॥ अनेक वाजींत्रोने

बजावे, अनेक नाचो नाचे; प्रभुनो जन्मोत्सव करीने, सर्व सुरासुर राचे, करमां धारण करीने प्रभुने, त्रिशला माता पासे; इन्द्रादिक आवीने बोले, पूरण हर्षोल्लासे ॥११॥ पुत्र तमारो प्रभु अमारो, सर्व विश्व आधार; तुज कुखे प्रभु जन्म्यामाटे, विश्वमात निर्धार; पंच धाव सोंपी प्रभु क्रीडा,–करवा माटे वेश; बत्रीश कोटि रत्नादिकनी; वृष्टि करे हरे क्लेश. ॥१२॥ (फूल केशरवाळा चोखा, नाडाछडी विगरे प्रभु सन्मुख उछाळवुं.) इंद्रादिक प्रभु वांदि पूजी, नन्दीश्वरमां जावे; अष्टान्हिकामहोत्सव करीने, आनंद मंगल पावे; निज निज कल्प सधावे सुरवर, दीक्षोत्सव अभिलाषे; केवलज्ञान महोत्सव इच्छा, राखी हर्ष विकासे. ॥१३॥ प्रभु जन्मोत्सव भारतदेशे, भक्ते कीधो भावे; घर घर आनंद मंगल वर्तो, स्नात्र महोत्सवदावे; सकल संघमां शांति वर्तो, इति उपद्रव शामो; स्नात्र महोत्सव सुणनाराने, गानारा सुख पामो. ॥ १४ ॥ परब्रह्ममहावीरप्रतापे, रोग टळो सहुजाति; दुष्ट देवना टळो उपद्रव, व्हेम टळो बहुजाति; गाम

नगर पुरदेशमां शांति, वर्तो प्रभुप्रतापे; आधि व्याधि संकट टळतां, प्रभु महावीरजापे ॥ १५ ॥ सर्व जगत्मां शान्ति वर्तो, धर्मी बनो नरनारी, दोषो क्षय पामो भक्तिथी, जनो बनो उपकारी; झघडा युद्धो उपशम थाओ, वृष्टि थशो मनमानी; पुण्यकर्म वधशो जगमांहि, वधशो शक्ति मझानी. ॥ १६ ॥ तपगच्छहीरविजयसूरिजगगुरु,-पट्टपरंपराधारी; पूज्य-गुरुरविसागर प्रगट्या, सर्वोपमजयकारी; शान्ति-दायकसुखसागरगुरु, घरघरमंगलकारी; बुद्धिसागर-सूरि आशो, शान्ति लहो नरनारी ॥ १७ ॥

---

फूल तथा केशरवाळा चोखाथी प्रभुने वधाववा.

पछी सिंहासनमांथी प्रभुजी तथा सिद्धचक्रजीने लइ चोखा पाणीथी पखाळ करी त्रण अंगलुहणां करी केशर (चंदन)थी पूजा करी फूल चढाववां अने सिंहासन मध्येनी रकेबीमांथी पाणी काढी नांखी धोइ साफ करी फरी केशरना स्वस्तिक करी पधरा-ववा. आरती मंगळदीवो प्रगटावी बंन्ने नाम्हाछडी

बांधी एक रकेबीमां मूकी कंकुना छांटा नाखी चो खाथी वधाववा, रकेबीमां सोपारी तथा एक पैसो मूकी रकेबी वच्चे राखी स्नात्रियाने सन्मुख बेसाडवो. रकेबीनी एक बाजु सात माटीनी कांकरी तथा सात मीठानी कांकरी लइ एक मीठानी कांकरी अने एक माटीनी कांकरी ए रीते दरेक ढगलीमां मूकी सात ढगलीओ करवी. पछी बीजी तरफ जळनी कुंडी राखवी. स्नात्रियाने उभापगे बेसाडी डाबा हाथ उपर जमणो हाथ राखावी विधि जणावनार माणस स्नात्रियाना हाथमां दरेक वखते एक मीठानी अने एक माटीनी कांकरी आपी ते साथे हथेलीमां चोखा पाणीना कलशमांथी थोडुं पाणी आपे अने आरती मंगल दीवानी रकेबी फरतुं लूण उतरावे. तेनी विगत.

लुण उतारो जिनवर अंगे, निर्मल जलधारा मनरंगे. ॥ लुण ॥ १ ॥ जिम जिम तडतड लुण ज फूटे, तिमतिम अशुभ कर्म बंध त्रुटे. ॥ लुण ॥ २ ॥ नयन सलुणां श्री जिनजिनां, अनुपमरूपदयारस

भीनां. ॥ लुण ॥ ३ ॥ रूप सलुणुं जिनजिनुं दीसे, लाज्युं लुण ते जलमां पेसे. ॥ लुण ॥ ४ ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइ जलधारा, जल निखेवीए लुण उदारा ॥ लुण ॥ ५ ॥ जे जिन उपर दूमणो प्राणी, ते एम थाजो लुण ज्युं पाणी. ॥ लुण ॥ ६ ॥ अगर कृष्णागरु कुंदरु सुगंधे, धूप करीजे विविध प्रबंधे. ॥ लुण ॥ ७ ॥ एम सात वखत लुण उतारवुं पछी आरती उतारवी.

---

## आरती.

जय जय वीरजिनेश्वरदेवा, सुरनर इन्द्र लहे सेवमेवा, बार गुणे गुणवंता प्यारा, त्रण भुवनना छो आधारा. जय जय. ॥ १ ॥ चोत्रीश अतिशय गुणगणधारी, पांत्रीशवाणी गुणे जयकारी. जय जय. ॥२॥ त्रिशलानंदन शिवसुखकारी, सिद्धारथ कुलशोभाकारी०॥ जय जय. ॥३॥ द्रव्यभावथी आरति करीए, मंगलमाला सहेजे वरीए. जय जय. ॥४॥ बुद्धिसागर प्रभुगुण लेवा, संघचतुर्विध करे नित्य सेवा. ॥ जय. ॥ ५ ॥

पछी प्रभुजी न देखे तेवी रीते पडखे जइने अगर प्रभुजीना अने स्नात्रीया वच्चे अंतर पडदो राखो स्नात्रीयाना जमणा अंगुठा उपर कंकुनो चांडलो करावचो. पछी मंगलदीवो उतारवो. मंगलदीवो उतारतां कपुर लावेला होय ते सळगावो रकेबीमां मूकी मंगलदीवो उतारवो

---

## मंगलदीवो.

मंगलदीवो मंगलकारी, करीये जिन आगळ जयकारी, अरिहंत मंगल पहेलुं जाणो, बीजुं सिद्ध मंगल मन आणो. ॥१॥ साधु मंगल त्रीजुं लहीए, सद्गुण पामी शिवपुर वहीए. ॥ मं० ॥ २। धर्म मंगल चोथुं सुखकारी, चार मंगलनी छे बलिहारी. ॥ मं० ॥ ३ ॥ भावमंगल हेते चित्त धारी, मंगलदीप करे नरनारी ॥ मं० ॥ ४ ॥ बुद्धिसागर आनंदकारी, संघ चतुर्विध शोभाकारी. ॥ ५ ॥

इति स्नात्रपूजा समाप्त